ये जीवन क्या है इकपल है

ये जीवन क्या है इकपल है जो लगता इतना लंबा सा
अजूबा सा अचम्भा सा वो वास्तव में केवल छल है
ये जीवन क्या .....

पल २ करके इतिहास बना, हर पल की एक कहानी है
इकपल में बीत गया बचपन, इक पल की बस ये जवानी है
है सत्य आज जो दीख रहा, वो सत्य नही वो फानी है
पल पल बहता जाए जीवन, कल कल बहता ज्यों पानी है
निकला कमान से तीर जैसे, कोई वृक्ष पर पका हुआ फल है
ये जीवन.....

इस अमन का यारो क्या कहना, पल में ही युध्द छिड जाते हैं
दम दोस्ती का जो भरते हैं, पल में शत्रु कहलाते हैं
इस पल इस दल के हैं जो भी, उस पल उस दल को सजाते हैं
इस वफा जफा के चक्कर में, पल २ सब धोखा खाते हैं
इस रंग बिरंगी दुनिया की, हर रोज बदलती महफिल है
ये जीवन.....

लग जाए तो लाटरी निर्धन को, पल में धनवान बना देवे
सत्ता कुर्सी की निर्बल को, पल में बलवान बना देवे
तृष्णा सम्पन पुरुष को भी, भिक्षुक समान बना देवे
आतकंवाद इक बस्ती को, पल में शमशान बना देवे
आकार बदलता रहता है, आकाश में जैसे बादल हैं
ये जीवन .....

है इक ही पल का जब जीवन, क्यों ना उस पल को हम जी लें
चाहे इक बूंद ही क्यूं न हो, अमृत समझ कर के पी लें
गर कद्र करें हम हर पल की, तो हर पल से खुशिया ही लें
पल छिन के बिखरे फूलों को, आओ इक माला में् सीलें
अधरों पर खिली मुस्कान है ये,कॉंटो में महक रहा गुल है
ये जीवन.....

क्या पता यह पल हो आखिरी पल, जो करना है अब ही कर लो
झोली खाली रह जाए ना, जो भरना है अब ही भर लो
आधार प्रभु का है धरना, तो आज अभी इस पल धर लो
कल की फिक्रे कल पर छोडो, हो आज सुखी ये ही वर लो
'दिलवर' सत्गुरु के चरणों में, मानव जीवन की मंजिल है
इक सजदा भर ही काफी है, और काफी केवल इक पल है
ये जीवन भी तो इक पल है, ये जीवन भी तो इक पल है,
जो लगता इतना लम्बा सा अजूबा सा अंचबा सा
वो वास्तव में इक छल है, ये जीवन भी तो इक पल है